History Honours Paper - II

इंगलैण्ड का इतिहास PART - II T.D.C

Q. 1. हेनरी अष्टम के शासनकाल में धर्म-सुधार आन्दोलन की विवेचना करें।

(Discuss th causes and effects of Reformation Movement.)

Ans हेनरी आठवें के शासनकाल में धर्म-सुधार आन्दोलन के दो पक्ष हैं - एक धार्मिक दूसरा राजनीतिक राजनीतिक दृष्टि से इस धर्म-सुधार आन्दोलन का उद्देश्य था 'पोप की सत्ता का अन्त करना' और धार्मिक उद्देश्य था 'कैथोलिक धर्म की बुराइयों को दूर करना और प्रोटेस्टेंट धर्म को आगे बढ़ाना'।

सन् 1521 ई० में हेनरी ने धर्म सुधार आन्दोलन के प्रधान नेता मार्टिन लूथर के विरुद्ध एक पुस्तक लिखी थी। इससे पोप हेनरी से बहुत खुश हुआ और उसे धर्म रक्षक का खिताब दिया था। इस तरह से बहुत दिनों तक राजा और पोप का संबंध अच्छा बना हुआ था। परन्तु सन् 1529 ई० में कैथरिन के तलाक के प्रश्न पर दोनों का संबंध बिगड़ गया। अब हेनरी को पोप की सत्ता खलने लगी और वह उसे नष्ट करने के लिए दृढ़-प्रतिज्ञ हो गया। अन्त में उसने इंगलैण्ड से पोप की सत्ता को समाप्त करके ही दम लिया।

यद्यपि यह सत्य है कि हेनरी को पोप के साथ शत्रुता थी। कैथोलिक धर्म से उनकी कोई खास दुश्मनी नहीं थी। वह तो केवल पोप के आधिपत्य से मुक्ति चाहता था। कैथोलिक धर्म में कोई सुधार करना नहीं चाहता था, वह पुराने धर्म से कोई परिवर्तन नहीं लाना चाहता था। उसने प्रोटेस्टेंट धर्म के प्रचार को भी रोकने की कोशिश की। उसने

B.A. Hons Part – I, Paper – II

पुराने कैथोलिक धर्म के 6 सिद्धान्तों को लेकर एक कानून भी बनाया और इसे मानने के लिए लोगों पर दबाव डाला। नहीं माननेवालों को दंड दिया जाता था। फिर उसने कैथोलिकों को भी कड़ी सजा दी जो अंग्रेजी चर्च को सर्वोच्च अधिकारी नहीं मानते थे। अत: यह स्पष्ट है कि हेनरी का उद्देश्य राजनीतिक था, धार्मिक नहीं।

धर्मसुधार आन्दोलन के कारण :- इसके निम्नलिखित कारण थे -

1. यूरोप के धर्म के क्षेत्र में भी सुधार के लिये आन्दोलन का सूत्रपात हुआ। इसके भी अनेक कारण थे। इसका पहला कारण पुनर्जागरण ही था। मध्यकाल में रोम का पोप ही धर्म का प्रधान था। कैथोलिक धर्म की प्रधानता थी। पोप और पादरियों के वाक्य ब्रह्मवाक्य समझे जाते थे। इस तरह से पोप की बात बाईबिल की बात की तरह थी जिसको कोई काट नहीं सकता था। धर्म में बहुत सारे अन्धविश्वास आ गये थे। लेकिन पुनर्जागरण ने प्रचलित अन्धविश्वासों, रुढ़िवादी विचारों और पुरानी आदतों को खूब कसकर झकझोर दिया। जिससे लोग सच्चा-झूठा और असली-नकली की पहचान करने लगे। इस तरह पुराने विचारों की जंजीर टूट गई। लोग धर्म में पवित्रता और सरलता की खोज करने लगे।

2. चर्च सिर्फ प्रतिक्रियावादी ही नहीं बल्कि दमनकारी भी था। चर्च नये विचारों का कट्टर विरोधी था और दूसरों को नये विचारों के कारण कठोर सजा भी दिया जाता था। उनको शारीरिक कष्ट तो होता था

परन्तु उसके विचार ज्यों का त्यों बने रहते थे। दमन नीति के कारण तो उनके विचारों का और अधिक प्रचार होता था।

3. चर्च आर्थिक एवं व्यापारिक क्षेत्र में सूद एवं मुनाफे की प्रथाओं का विरोधी था लेकिन सूद एवं मुनाफे की अभाव में वाणिज्य एवं व्यापार की प्रगति सम्भव नहीं थी। जिससे धनी और व्यापारी वर्ग चर्च के विरोधी बन गये।

4. चर्च के पास बहुत सम्पत्ति थी उधार धन के अभाव में राष्ट्र निर्माण का काम ठप्प पड़ा हुआ था।

5. चर्च के पास सम्पत्ति तो थी किन्तु संतोष नहीं था अतः वह अपने अधीन रहने वाले लोगों का शोषण करता था।

6. चर्च और राज्य में धर्म-सत्ता और राज्यसत्ता में आधिपत्य के लिए प्रतियोगिता की भावना शुरू हो गयी थी। लेकिन धर्म सुधार आन्दोलन का सबसे बड़ा कारण था धार्मिक संस्थाएँ- मठों एवं गिरिजाघरों में कुव्यवस्था और भ्रष्टाचार का प्रचार। ये सब संस्थाएँ कुरीतियों का केन्द्र थी। पुजारी लोग सांसारिकता के शिकार हो गये थे। पोप लोग पैसे लेकर लोगों को पापों से मुक्त किया करते थे।

इन्हीं कारणों से यूरोप में धर्मसुधार आन्दोलन हो गया था। 16वीं सदी में यह आन्दोलन पूर्ण रूप से सफल हो गया। शुरू के सुधारकों में जॉन विकलिफ, जॉन हस और उत्तरकालीन सुधारकों में मार्टिन लूथर, ज्विंग्ली और काल्विन के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

इंग्लैण्ड का इतिहास, Paper-II

परिणाम :- धर्म सुधार

आन्दोलन के निम्नलिखित परिणाम हुए :-

1. धर्म सुधार आन्दोलन के सफल होने से ईसाई संसार की धार्मिक एकता नष्ट हो गई। अब कैथोलिक तथा प्रोटेस्टेन्ट नाम के दो धर्म सम्प्रदाय की स्थापना हो गई। कुछ दिनों तक ये दोनों सम्प्रदाय आपस में लड़ते-झगड़ते रहे परन्तु धीरे-धीरे दोनों सम्प्रदाय में एकता बढ़ने लगी।
2. महाजनी और व्यापार को प्रोत्साहन मिला।
3. राष्ट्रीयता की भावना बढ़ गई।
4. सभी लोगों का दिमाग सोचने-विचारने के लिए स्वतंत्र हो गया। इससे नये विचारों का उदय हुआ। जिससे ज्ञान की काफी उन्नति हुई।

इंगलैण्ड में धर्म सुधार → यूरोप के धर्म सुधार आन्दोलन का इंगलैण्ड पर भी गहरा असर पड़ा। जॉन कोलेट नामक पादरी धर्म सुधार के पक्ष में था। जॉन विकलिफ इंगलैण्ड का ही रहने वाला था। उसने इंगलैण्ड में धर्म सुधार का पथ-प्रदर्शन किया। अतः धर्म सुधार का अग्रदूत था। वह अध्ययनशील व्यक्ति था। शिक्षा समाप्ति के बाद वह ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में एक अध्यापक के पद पर काम करने लगा। उसे धार्मिक अध्ययन-मनन में विशेष प्रेम था। फलतः उसने ईसाई धर्म का गहरा अध्ययन किया और उसके वास्तविक स्वरूप को सबों को समझाया।

इंगलैण्ड में धर्म सुधार आन्दोलन की वास्तविक प्रगति 16 वीं सदी के प्रथम चरण में हेनरी आठवें के राज्यकाल में हुई थी।

D. Jha.